मधुर निश्चय

सिद्धयोगियों द्वारा बताए गए कृतज्ञता के उनके अनुभव

मैं अपने एक बेटे की कहानी सुनाना चाहती हूँ जिसकी उम्र अब तीस वर्ष के आस-पास है और वह पैरिस में एक प्रतिष्ठित पेस्ट्री शेफ़ [मिष्ठान बनाने वाला पाककर्मी] है।

सन् १९९० की बात है। उस समय मेरा बेटा दो साल का था और हम गुरुदेव सिद्धपीठ में थे। श्रीगुरुमाई गुरुचौक में दर्शन दे रही थीं और मेरे बेटे ने मुझसे कहा कि मैं उनके पास जाकर उसके लिए टॉफ़ी लेकर आऊँ क्योंकि उसने देखा था कि गुरुमाई जी दूसरे बच्चों को टॉफ़ियाँ दे रही हैं।

इसलिए मैंने उससे कहा : "अगर तुम्हें टॉफ़ी चाहिए तो जाओ और गुरुमाई जी से माँगो।" अतः वह गया, दर्शन करके गुरुचौक से वापस जा रहे लोगों के बीच से निकलता हुआ, उसने उस लड़की से बात करने का प्रयास किया जो गुरुमाई जी के दर्शन को सुचारू रूप से नियोजित करने में मदद कर रही थी। परन्तु उसे मेरे बेटे की बात समझ में नहीं आई क्योंकि मेरा बेटा केवल फ्रेंच भाषा में ही बात कर पाता था। तो वह टॉफ़ी लिए बिना ही वापस आ गया।

उसने मुझसे फिर कहा, और मैंने उसे दोबारा वही उत्तर दिया : "अगर तुम्हें टॉफ़ी चाहिए तो जाओ और गुरुमाई जी से माँगो।" तो उसने फिर से कोशिश की और वह एक बार फिर बिना टॉफ़ी लिए वापस आ गया। ऐसा तीन बार हुआ।

चौथी बार, दर्शन सहायक उस लड़की को समझ में आ गया कि मेरा बेटा क्या कहना चाहता है और उसने गुरुमाई जी से पूछा कि क्या वह उसे टॉफ़ी दे सकती है। गुरुमाई जी ने कहा, "नहीं!"

मेरा बेटा अचम्भित रह गया और वह बहुत दुःखी होकर रोते-रोते वापस आया।

कुछ देर बाद, दर्शन के समापन पर सब लोग वहाँ शान्त बैठे थे, मेरा बेटा अचानक खड़ा हुआ और सब ओर उछलने-कूदने लगा, और दौड़-दौड़कर चिल्लाने लगा, "ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय!"

गुरुमाई जी और गुरुचौक में उपस्थित सभी लोग हँसने लगे। मेरा बेटा "ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय . . ." कहता रहा और गुरुमाई जी के सामने सब ओर दौड़ता रहा।

उसी पल, मैं समझ गई कि गुरुमाई जी ने एक साधारण-सी टॉफ़ी के लिए "नहीं" कहा था जो कि कुछ ही मिनटों में समाप्त हो जाती और उसके बदले उन्होंने मेरे बेटे को "ॐ नमः शिवाय" के साथ शक्तिपात दीक्षा द्वारा अन्तर-आनन्द की चिरस्थाई मिठास दी है।

सालों बाद, अपनी किशोरावस्था में मेरा बेटा सेवा अर्पित करने श्री मुक्तानन्द आश्रम गया। उसने अमृत कॅफ़े में ब्रेड और पेस्ट्री बनाईं और यह सेवा अर्पित करते हुए ही उसे मिठाइयाँ बनाने की अपनी गहरी इच्छा और कौशल का पता चला। फ़्रान्स लौटने पर उसने पाककला की शिक्षा देने वाली विशेष पाठशाला में दाख़िला लिया जिससे कि उसका यह कौशल और निखर सके। अपनी पढ़ाई पूरी कर वह श्री मुक्तानन्द आश्रम वापस गया। एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन में स्टाफ़ सदस्य के रूप में उसने कई वर्षों तक सेवा अर्पित की, इस दौरान उसने गुरुमाई जी व आश्रमवासियों के लिए मिष्ठान बनाए।

हाल ही में मेरे बेटे ने मुझे बताया कि गुरुमाई जी उसे "मिठाईवाला" के नाम से बुलाती हैं। यह सुनकर मुझे गुरुमाई जी के साथ हुए उसके इस पहले अनुभव की याद आई और मुझे लगता है कि तबसे मिठास और दृढ़ निश्चय उसके जीवन का केन्द्रण रहे हैं।

~ पैरिस, फ़्रान्स की एक सिद्धयोगी

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।